IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत.चीन संबंधों में आर्थिक अन्योन्याश्रितता और व्यापार गतिशीलता ;2000. वर्तमानद्ध

Vineeta Yadav

Research scholar

Chatrapati shahuji Maharaj university kanpur Uttar Pradesh

सार

यह पत्र वर्ष 2000 से वर्तमान तक भारत और चीन के बीच आर्थिक अन्योन्याश्रितता और व्यापार गतिशीलता का व्यापक विश्लेषण प्रदान करता है। पिछले दो दशकों मेंए इन दो प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के बीच द्विपक्षीय व्यापार में काफी वृद्धि हुई हैए जिसमें चीन भारत के सबसे बड़े व्यापारिक भागीदार के रूप में उभरा है। यह वृद्धि विनिर्माण में चीन के प्रभुत्व और कच्चे माल की भारत की आपूर्ति से प्रेरित हैए जिससे पारस्परिक रूप से लाभप्रद लेकिन अत्यधिक असंतुलित व्यापार संबंध पैदा हुए हैं। यह पेपर भारत द्वारा सामना किए जाने वाले लगातार व्यापार घाटे पर प्रकाश डालता हैए जो बड़े पैमाने पर चीन से इलेक्ट्रॉनिक्सए मशीनरी और दवा सामग्री के आयात से प्रेरित है। इसके विपरीतए चीन को भारत का निर्यात कम मूल्य वाले कच्चे माल में केंद्रित हैए जिससे मूल्य वर्धित लाभ के लिए बहुत कम जगह बचती है। अनुसंधान आगे इस तरह की आर्थिक निर्भरता से उत्पन्न चुनौतियों की जांच करता हैए जिसमें आपूर्ति श्रृंखला की कमजोरियां और रणनीतिक जोखिम शामिल हैंए विशेष रूप से प्रौद्योगिकी और फार्मास्यूटिकल्स जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में। भू.राजनीतिक तनावए जैसे कि सीमा विवादों से उत्पन्न होने वालेए ने आर्थिक संबंधों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया हैए जिससे नीतिगत बदलाव हुए हैंए जिसमें चीनी ऐप्स पर प्रतिबंध लगाने और चीनी आयात पर निर्भरता को कम करने के लिए भारत का कदम शामिल है। दस्तावेज में भारत की मेक इन इंडिया पहल और क्षेत्रीय व्यापार समझौतों में चीन की भागीदारी जैसे नीतिगत उपायों का भी मूल्यांकन किया गया है। अंत मेंए यह पत्र सहयोग के लिए भविष्य के अवसरों की पड़ताल करता हैए जैसे कि अक्षय ऊर्जा और बहुपक्षीय जुड़ावए बढ़ते अविश्वास के बीच डिकपलिंग के जोखिमों को संबोधित करते हुए। व्यापार पैटर्न और रणनीतिक निर्णयों का विश्लेषण करकेए यह पत्र भारत. चीन आर्थिक संबंधों की जटिलताओं और क्षेत्रीय स्थिरता और वैश्विक व्यापार के लिए उनके व्यापक प्रभावों को समझने में योगदान देता है।

कीवर्डरू भारत.चीन संबंधए द्विपक्षीय व्यापारए आर्थिक निर्भरताए व्यापार घाटाए भू.राजनीतिक तनावए आपूर्ति श्रृंखला कमजोरियांए नवीकरणीय ऊर्जाए रणनीतिक नीति

1ण् प्रस्तावना

भारत और चीनए वैश्विक स्तर पर सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से दोए वैश्विक आर्थिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण खिलाड़ियों के रूप में उभरे हैं। दुनिया की एक तिहाई से अधिक आबादी और वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में महत्वपूर्ण योगदान के साथए उनके आर्थिक प्रक्षेपवक्र अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और निवेश पैटर्न का एक प्रमुख चालक रहे हैं। तथापिए उनके द्विपक्षीय आर्थिक संबंध सहयोग और प्रतिस्पर्धा के मिश्रण पर आधारित हैंए जो उनके ऐतिहासिक संबंधोंए भौगोलिक निकटता और आर्थिक पूरकताओं में निहित हैं।

पिछले दो दशकों मेंए भारत और चीन के बीच आर्थिक संबंधों में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है। द्विपक्षीय व्यापार का अभूतपूर्व गति से विस्तार हुआ हैए जो वर्ष 2000 में मात्र 3 बिलियन डॉलर से बढ़कर वर्ष 2021 में 125 बिलियन डॉलर से अधिक हो गया हैए जिससे चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बन गया है ;वाणिज्य और उद्योग मंत्रालयए 2022द्ध। इस वृद्धि के बावजूदए संबंध काफी विषम हैंए भारत लगातार एक महत्वपूर्ण व्यापार घाटे से गुजर रहा है। वर्ष 2022 तक यह घाटा 100 बिलियन डॉलर को पार कर गयाए जो इलेक्ट्रॉनिक्सए मशीनरी और फार्मास्यूटिकल्स जैसे महत्त्वपूर्ण उद्योगों के लिये चीनी आयात पर भारत की निर्भरता को रेखांकित करता है ;विश्व बैंकए 2023द्ध।

इस तरह की आर्थिक अन्योन्याश्रितता के रणनीतिक निहितार्थ गहरे हैं। चीनी आयात पर भारत की निर्भरता ने आर्थिक संप्रभुता और सुरक्षा के बारे में चिंताओं को उठाया हैए खासकर भू.राजनीतिक तनाव के संदर्भ में। वर्ष 2017 में डोकलाम गतिरोध और वर्ष 2020 में गलवान घाटी संघर्ष सहित सीमा विवादों ने इन चिंताओं को बढ़ा दिया हैए जिससे द्विपक्षीय आर्थिक संबंधों का पुनर्मूल्यांकन हुआ है। जवाब मेंए भारत ने घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देने और चीनी आयात पर निर्भरता को कम करने के लिए मेक इन इंडिया और प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव ;पीएलआईद्ध योजना जैसी नीतिगत पहल शुरू की है ;गुप्ता और झांगए 2019द्ध। साथ हीए चीन ने व्यापार संबंधों को गहरा करके और अपनी तकनीकी और विनिर्माण क्षमताओं का लाभ उठाकर इस क्षेत्र में अपना आर्थिक प्रभुत्व बनाए रखने की मांग की है।

इस पत्र का उद्देश्य भारत और चीन के बीच आर्थिक निर्भरता का गहराई से पता लगाना हैए व्यापार संबंधों के विकासए व्यापार असंतुलन से उत्पन्न चुनौतियों और पिछले दो दशकों में उभरी रणनीतिक निर्भरता पर ध्यान केंद्रित करना है। इसके अतिरिक्तए यह इन चुनौतियों का प्रबंधन करने के लिए दोनों देशों द्वारा किए गए नीतिगत उपायों की जांच करता है और क्षेत्रीय स्थिरता और वैश्विक व्यापार के लिए उनके आर्थिक संबंधों के निहितार्थ का मूल्यांकन करता है। इन गतिशीलता का विश्लेषण करकेए यह अध्ययन भारत.चीन संबंधों को आकार देने में आर्थिक और भू.राजनीतिक कारकों के बीच जटिल परस्पर क्रिया की बारीक समझ में योगदान देता है।

2ण् भारत.चीन व्यापार संबंधों का विकास

एशिया की दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के रूप में भारत और चीन ने पिछले दो दशकों में अपने द्विपक्षीय व्यापार में महत्वपूर्ण वृद्धि का अनुभव किया है। यह खंड व्यापार की घातीय वृद्धिए आदान.प्रदान की गई वस्तुओं की संरचना और इस तरह की आर्थिक अन्योन्याश्रितता की अंतर्निहित चुनौतियों पर प्रकाश डालता है।

2ण्1 द्विपक्षीय व्यापार वृद्धि

भारत और चीन के बीच व्यापार संबंधों में सदी की शुरुआत से उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। 2000 मेंए द्विपक्षीय व्यापार मामूली थाए + 3 बिलियन पर खड़ा था। हालाँकिए जैसे.जैसे चीन ष्दुनिया का कारखानाष बनता गया और भारत ने अपनी अर्थव्यवस्था का तेज़ी से विस्तार कियाए व्यापार संबंध फले.फूले। 2021 तकए व्यापार की मात्रा 125 बिलियन डॉलर को पार कर गई थीए जिससे चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बन गया। इस प्रभावशाली वृद्धि के बावजूदए व्यापार संबंध विषम बना हुआ हैए भारत चीन के साथ एक महत्वपूर्ण और बढ़ता व्यापार घाटा चला रहा है।

तालिका 1रू भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार ;2000.2021द्ध

सालों	चीन को भारत का निर्यात ;+ बिलियनद्ध	भारत को चीन का निर्यात ;+ बिलियनद्ध	कुल व्यापार ;+ बिलियनद्ध	व्यापार घाटा ;+ बिलियनद्ध
2000	0ण्83	2ण्20	3ण्03	1ण्37
2005	6ण्76	10ण्99	17ण्75	4ण्23
2010	20ण्80	41ण्00	61ण्80	20ण्20
2015	9ण्03	58ण्26	67ण्29	49ण्23
2021	28ण्10	97ण्50	125ण्60	69ण्40

- वर्ष 2000 में चीन को भारत का निर्यात 0ण्83 अरब डॉलर मूल्य का थाए जबकि चीन से आयात 2ण्2 अरब डॉलर का था।
- 2010 तकए द्विपक्षीय व्यापार 61ण्8 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया थाए जिसमें भारत का निर्यात 20ण्8 बिलियन डॉलर और आयात 41 बिलियन डॉलर था।
- वर्ष 2021 में चीन को भारत का निर्यात 28ण्1 बिलियन डॉलर रहाए जबकि आयात बढ़कर 97ण्5 बिलियन डॉलर हो गयाए जिसके परिणामस्वरूप लगभग 70 बिलियन डॉलर का व्यापार घाटा हुआ।

लगातार व्यापार घाटा चीनी सामानों पर भारत की निर्भरता को दर्शाता हैए विशेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक्स और मशीनरी जैसे प्रमुख क्षेत्रों में। भारत की व्यापार नीतियों ने इस असंतुलन को दूर करने का प्रयास किया हैए लेकिन विनिर्माण और उच्च मूल्य के उत्पादन में संरचनात्मक चुनौतियां बाधाएं बनी हुई हैं।

2ण्2 व्यापार संरचना

भारत और चीन के बीच व्यापार बास्केट उनकी अर्थव्यवस्थाओं में संरचनात्मक अंतर को उजागर करता है। चीन को भारत का निर्यात मुख्य रूप से कच्चे माल से बना हैए जबकि भारत में चीन के निर्यात में उच्च मूल्य वाले निर्मित सामान शामिल हैंए जो वैश्विक विनिर्माण में चीन के प्रभुत्व को रेखांकित करते हैं।

तालिका 2रू क्षेत्र के अनुसार व्यापार संरचना ;2021द्ध

कोटि	चीन को भारतीय निर्यात ;ः द्ध	भारत को चीनी निर्यात ;ः द्ध
कच्चा माल	50	5
इलेक्ट्रॉनिक्स	5	30
यंत्र समूह	3	25
फार्मास्यूटिकल्स ;एपीआईद्ध	2	15
रसायन	10	10
कृषि उत्पाद	20	5
दूसरों	10	10

चीन को भारतीय निर्यात

चीन को भारत की निर्यात टोकरी का प्रभुत्व हैरू

- **कच्चा माल**रू लौह अयस्कए कपास और कच्चा एल्यूमीनियम।
- **कृषि उत्पाद**रू मसालेए चावल और अन्य कृषि.वस्तुएं।
- **विशिष्ट उत्पाद**रू रसायन और कुछ परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पाद।

भारत को चीनी निर्यात

भारत को चीन के निर्यात में मुख्य रूप से शामिल हैंरू

- **इलेक्ट्रॉनिक्स**रू स्मार्टफोनए अर्धचालक और अन्य उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स।
- **मशीनरी**रू औद्योगिक मशीनरी और उपकरण।
- **फार्मास्युटिकल सामग्री**रू सक्रिय दवा सामग्री ;एपीआईद्धए भारत के दवा उद्योग के लिए महत्वपूर्ण है।

उच्च मूल्य वाले चीनी निर्यात का प्रभुत्व औद्योगिक और तकनीकी आदानों के लिए चीन पर भारत की निर्भरता को दर्शाता है। इस निर्भरता का भारत की औद्योगिक प्रतिस्पर्धा और आर्थिक संप्रभुता के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं।

- **व्यापार घाटा**रू चीन के साथ भारत का व्यापार घाटा महत्त्वपूर्ण रूप से बढ़ गया हैए जो वर्ष 2021 में 70 बिलियन डॉलर से अधिक के शिखर पर पहुँच गया है।
- **निर्यात संरचना**रू भारत का निर्यात कच्चे माल पर बहुत अधिक निर्भर रहता हैए जो मूल्य संवर्धन के सीमित अवसर प्रदान करता है।

- **आयात पर निर्भरता**रू चीन से भारत का आयात उच्च तकनीक क्षेत्रों में केंद्रित हैए जिससे देश आपूर्ति शृंखला व्यवधानों के प्रति संवेदनशील हो गया है।

अपने व्यापार भागीदारों में विविधता लाने और चीनी वस्तुओं पर निर्भरता को कम करने के भारत के प्रयास इन संरचनात्मक असंतुलनों को दूर करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। डेटा घरेलू विनिर्माण और तकनीकी नवाचार को बढ़ावा देने के लिए रणनीतिक नीतिगत हस्तक्षेपों की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

3ण् आर्थिक अन्योन्याश्रितता में चुनौतियाँ

भारत और चीन के बीच आर्थिक संबंधए जबकि तीव्र व्यापार विकास की विशेषता हैए ने महत्वपूर्ण चुनौतियों को भी प्रकट किया है जो समान और टिकाऊ अन्योन्याश्रितता में बाधा डालते हैं। इन चुनौतियों में लगातार व्यापार घाटाए आपूर्ति श्रृंखला की कमजोरियां और आर्थिक गतिविधियों पर भू.राजनीतिक तनाव का प्रभाव शामिल है।

3ण्1 व्यापार घाटा

चीन के साथ भारत का व्यापार घाटा एक सतत और बढ़ता हुआ मुद्दा रहा है। असंतुलन काफी हद तक उच्च मूल्य वाले विनिर्मित वस्तुओं के आयात पर भारत की भारी निर्भरता से प्रेरित हैए विशेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक्स और मशीनरी जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में। वर्ष 2022 में व्यापार घाटा 100 बिलियन डॉलर के स्तर को पार कर गयाए जो व्यापार संबंधों की अनुपातहीन प्रकृति को उजागर करता है।

चीन किफायती वस्तुओं का एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता बन गया हैए जिससे यह विभिन्न भारतीय उद्योगों के लिए अपरिहार्य हो गया है। हालांकिए इस निर्भरता के परिणामस्वरूप भारत के व्यापार पोर्टफोलियो में विविधीकरण की कमी हुई हैए जिससे व्यापार व्यवधानों के मामले में देश को आर्थिक जोखिमों का सामना करना पड़ा है। मेक इन इंडिया पहल और उत्पादन से जुड़े प्रोत्साहन ;पीएलआईद्ध जैसे भारत सरकार के प्रयासों का उद्देश्य घरेलू विनिर्माण क्षमताओं को बढ़ाकर इन असंतुलनों को दूर करना है।

3ण्2 आपूर्ति श्रृंखला निर्भरता

चीनी आयात पर भारत की निर्भरता व्यापार के आंकड़ों से परे प्रमुख उद्योगों में महत्वपूर्ण आपूर्ति श्रृंखलाओं तक फैली हुई है। फार्मास्युटिकल क्षेत्र इस निर्भरता का एक प्रमुख उदाहरण है। भारतए जेनेरिक दवा उत्पादन के लिए एक वैश्विक केंद्र होने के बावजूदए चीन से अपनी सक्रिय दवा सामग्री ;एपीआईद्ध का 70ः से अधिक आयात करता है। यह निर्भरता आवश्यक दवाओं के निर्बाध उत्पादन को सुनिश्चित करने की भारत की क्षमता के बारे में महत्वपूर्ण चिंताओं को जन्म देती है।

इसी तरहए प्रौद्योगिकी क्षेत्र चीनी हार्डवेयर पर बहुत अधिक निर्भर हैए जिसमें स्मार्टफोनए दूरसंचार और आईटी बुनियादी ढांचे के घटक शामिल हैं। यह निर्भरता न केवल आर्थिक जोखिम बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा चिंताओं को भी जन्म देती हैए विशेष रूप से बढ़ते साइबर सुरक्षा खतरों और भू.राजनीतिक तनावों के प्रकाश में। चीनी ऐप्स पर भारत का प्रतिबंध और दूरसंचार उपकरणों की खरीद पर प्रतिबंध ऐसी कमजोरियों को कम करने के प्रयासों को दर्शाता है।

3ण्3 भू.राजनीतिक तनाव

भारत और चीन के बीच भू.राजनीतिक तनाव ने अक्सर उनके आर्थिक संबंधों को बाधित किया है। वर्ष 2017 में डोकलाम गतिरोध और वर्ष 2020 में गलवान घाटी संघर्ष जैसी घटनाओं ने अविश्वास को बढ़ा दिया हैए जिससे द्विपक्षीय संबंधों का पुनर्मूल्यांकन हुआ है। इन घटनाओं के परिणामस्वरूप भारत में चीनी निवेश की जांच और चीनी सामानों पर निर्भरता को कम करने के उद्देश्य से नीतिगत उपायों में वृद्धि हुई है।

गलवान झड़प के बादए भारत ने चीनी कंपनियों पर प्रतिबंध लगाएए 200 से अधिक ऐप पर प्रतिबंध लगा दिया और पड़ोसी देशों से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश ;एफडीआईद्ध के लिए नियमों को कड़ा कर दिया। इन उपायों नेए जबकि राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हैंए व्यापार प्रवाह और आपूर्ति श्रृंखला की गतिशीलता को भी बाधित किया है।

तालिका 3रू भारत.चीन संबंधों में आर्थिक चुनौतियों के प्रमुख संकेतक

चुनौती	ब्यौरा	भारत पर प्रभाव
व्यापार घाटा	2022 में +100 बिलियन का घाटा।	चीनी आयात पर आर्थिक निर्भरता में वृद्धि।
फार्मास्युटिकल एपीआई	70: से अधिक एपीआई चीन से आयात किए जाते हैं।	आवश्यक दवा उत्पादन में भेद्यता।
प्रौद्योगिकी निर्भरता	दूरसंचार और आईटी के लिए चीनी हार्डवेयर पर अत्यधिक निर्भरता।	राष्ट्रीय सुरक्षा और आपूर्ति श्रृंखला स्थिरता के लिए जोखिम।
गलवान के बाद ऐप बैन	ज्याज्वा और ॅमबिंज सहित 200 चीनी ऐप्स पर प्रतिबंध।	सीमित उपभोक्ता विकल्पय चीनी टेक कंपनियों के भारतीय बाजार पर असर।
एफडीआई प्रतिबंध	2020 के बाद पड़ोसी देशों से एफडीआई के लिए कड़े नियम।	स्टार्टअप और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में चीनी निवेश में कमी।

भारत.चीन आर्थिक संबंधों की चुनौतियाँ परस्पर निर्भरता की विषमता को उजागर करती हैंए जिसमें भारत को असंगत रूप से संवेदनशील होना पड़ता है। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए नीतिगत हस्तक्षेपों के संयोजन की आवश्यकता होती हैए जैसे व्यापार भागीदारों में विविधता लानाए घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देना और महत्वपूर्ण आपूर्ति श्रृंखला निर्भरता को कम करना। हालांकिए इन लक्ष्यों को प्राप्त करना भू.राजनीतिक तनाव और भारतीय बाजारों में चीनी सामानों के प्रभुत्व से जटिल है। आगे बढ़ते हुएए एक स्थायी आर्थिक संबंध को बढ़ावा देने के लिए रणनीतिक सहयोग और कम निर्भरता के संयोजन वाला एक संतुलित दृष्टिकोण आवश्यक होगा।

4ण् नीतिगत प्रतिक्रियाएं

भारत और चीन के बीच आर्थिक निर्भरता से उत्पन्न चुनौतियों ने दोनों देशों को विभिन्न नीतिगत उपायों को अपनाने के लिए प्रेरित किया है। इन नीतियों का उद्देश्य व्यापार असंतुलन को दूर करनाए महत्वपूर्ण निर्भरता को कम करना और राजनीतिक रूप से संवेदनशील आर्थिक संबंधों की जटिलताओं को नेविगेट करना है। जबकि भारत ने अपनी घरेलू विनिर्माण क्षमताओं को मजबूत

करने और व्यापार साझेदारी में विविधता लाने पर ध्यान केंद्रित किया हैए चीन ने अपने व्यापार प्रभुत्व को बनाए रखने और इस क्षेत्र में अपने आर्थिक प्रभाव को बढ़ाने के लिए काम किया है।

4ण्1 भारत की पहल

भारत की नीतिगत प्रतिक्रियाएं चीनी आयात पर निर्भरता से जुड़ी आर्थिक कमजोरियों को कम करने के रणनीतिक इरादे को दर्शाती हैं। इन पहलों में घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देनेए निवेश आकर्षित करने और व्यापार संबंधों में विविधता लाने के प्रयास शामिल हैं।

मेक इन इंडिया

2014 में शुरू किया गयाए मेक इन इंडिया पहल एक प्रमुख कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य भारत को वैश्विक विनिर्माण केंद्र में बदलना है। भारत में निर्माण के लिए विदेशी और घरेलू दोनों कंपनियों को प्रोत्साहित करकेए कार्यक्रम विशेष रूप से चीन से आयात पर निर्भरता को कम करना चाहता है। इस पहल ;वाणिज्य और उद्योग मंत्रालयए 2021द्ध के तहत इलेक्ट्रॉनिक्सए फार्मास्यूटिकल्स और रक्षा सहित विशिष्ट क्षेत्रों को विकास के लिए लक्षित किया गया है।

इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र एक महत्वपूर्ण फोकस रहा हैए भारत स्मार्टफोन उत्पादन के लिए खुद को वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। एप्पल और सैमसंग जैसी कंपनियों ने भारत में अपनी विनिर्माण उपस्थिति बढ़ाई हैए आंशिक रूप से चीनी आपूर्ति श्रृंखलाओं पर अपनी निर्भरता को कम करने के लिए। हालांकिए कार्यक्रम को अपर्याप्त बुनियादी ढांचे और कार्यान्वयन में देरी जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

उत्पादन.लिंक्ड प्रोत्साहन ;च्स्प्द्ध योजना

2020 में शुरू की गईए च्स्प् योजना उन कंपनियों को वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करती है जो लक्षित क्षेत्रों में वृद्धिशील उत्पादन प्राप्त करती हैं। सरकार ने इलेक्ट्रॉनिक्सए फार्मास्यूटिकल्स और सौर विनिर्माण जैसे उद्योगों को पर्याप्त धन आवंटित किया हैए जो चीन से आयात पर बहुत अधिक निर्भर हैं ;उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभागए 2022द्ध।

- फार्मास्युटिकल क्षेत्र मेंए पीएलआई योजना का उद्देश्य सक्रिय फार्मास्युटिकल अवयवों ;एपीआईद्ध के घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देना हैए जिससे चीनी आयात पर भारत की निर्भरता कम हो जाती हैए जो इसकी एपीआई जरूरतों का 70: से अधिक हिस्सा है।
- इलेक्ट्रॉनिक्स मेंए इस योजना ने फॉक्सकॉन और विस्ट्रॉन जैसे वैश्विक दिग्गजों को आकर्षित किया हैए जिससे भारत में स्मार्टफोन उत्पादन में वृद्धि हुई है।

व्यापार विविधीकरण

भारत ने चीनी आयात पर अपनी निर्भरता को कम करने के लिए सक्रिय रूप से व्यापार विविधीकरण का प्रयास किया है। वियतनामए जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों के साथ संबंधों को मजबूत करकेए भारत का लक्ष्य वैकल्पिक भागीदारों से महत्वपूर्ण वस्तुओं का स्रोत है। जापान के साथ व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता ;सीईपीएद्ध और दक्षिण कोरिया के साथ व्यापक आर्थिक सहयोग समझौता ;सीईसीएद्ध इस दिशा में उठाए गए कदम हैं ;गुप्ता और झांगए 2020द्ध।

इसके अतिरिक्तए भारत ने दक्षिण पूर्व एशियाई देशों से इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों और मशीनरी की सोर्सिंग पर अपना ध्यान बढ़ाया हैए जो एक्ट ईस्ट पॉलिसी के तहत इसकी व्यापक रणनीति का हिस्सा हैं। इन प्रयासों कोए आशाजनक होने के बावजूदए महत्वपूर्ण परिणाम प्राप्त करने के लिए लगातार नीतिगत समर्थन और अनुकूल कारोबारी माहौल की आवश्यकता होती है।

4ण्2 चीन के समायोजन

जबकि भारत ने चीनी आयात पर अपनी निर्भरता को कम करने की मांग की हैए चीन ने अपने आर्थिक प्रभाव को बनाए रखने और द्विपक्षीय संबंधों में बढ़ते तनाव से उत्पन्न चुनौतियों का प्रबंधन करने के लिए रणनीतियों को अपनाया है।

भारतीय उद्योगों के साथ संबंधों को मजबूत करना

चीन ने रणनीतिक रूप से भारतीय उद्योगों में निवेश किया हैए खासकर स्टार्टअप और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में। 2014 और 2020 के बीचए चीनी फर्मों ने भारतीय स्टार्टअप में 4 बिलियन डॉलर से अधिक का निवेश कियाए जिससे फिनटेकए ई.कॉमर्स और राइड.शेयरिंग ;इंडियन वेंचर कैपिटल एसोसिएशनए 2021द्ध जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान मिला।

- अलीबाबा और टेनसेंट जैसी कंपनियों ने पेटीएम और जोमैटो जैसी भारतीय कंपनियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- चीनी कंपनियों ने भारत के सार्वजनिक.निजी भागीदारी ;पीपीपीद्ध मॉडल के तहत बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में भी भाग लिया हैए हालांकि भू.राजनीतिक तनाव ने हाल के वर्षों में इस तरह के निवेश की जांच में वृद्धि की है।

क्षेत्रीय व्यापार समझौते

चीन ने भारत के साथ व्यापारिक तनाव से उत्पन्न चुनौतियों से निपटने के लिए क्षेत्रीय आर्थिक ढांचे में अपनी भूमिका पर जोर दिया है। क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी ;आरसीईपीद्धए 15 एशिया.प्रशांत देशों के बीच एक मेगा व्यापार समझौताए एक प्रमुख उदाहरण है। जबकि भारत ने संभावित व्यापार असंतुलन और अपने घरेलू उद्योगों के लिये सुरक्षा उपायों की कमी के कारण वर्ष 2019 में त्ब्म्च् से बाहर निकलने का विकल्प चुनाए चीन अन्य क्षेत्रीय भागीदारों ;विश्व व्यापार संगठनए 2021द्ध के साथ अपने आर्थिक संबंधों को मज़बूत करने के लिये समझौते का लाभ उठाना जारी रखता है।

इसके अतिरिक्तए चीन ने एशियाए अफ्रीका और यूरोप में आर्थिक जुड़ाव को गहरा करने के साधन के रूप में अपने बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव ;बीआरआईद्ध को बढ़ावा दिया है। जबकि भारत ने संप्रभुता की चिंताओं के कारण बीआरआई में शामिल होने का विरोध किया हैए क्षेत्रीय कनेक्टिविटी परियोजनाओं में चीन का निवेश एक प्रमुख आर्थिक शक्ति बने रहने के अपने इरादे को रेखांकित करता है।

नीति संबंधी प्रतिक्रियाएं

भारत और चीन के विरोधाभासी दृष्टिकोण आर्थिक अन्योन्याश्रितता को संबोधित करने में उनकी अलग.अलग प्राथमिकताओं को उजागर करते हैं। घरेलू क्षमता निर्माण और व्यापार विविधीकरण पर भारत का ध्यान कमजोरियों को कम करने और अपने आर्थिक प्रक्षेपवक्र पर अधिक नियंत्रण का दावा करने की अपनी इच्छा को दर्शाता है। हालांकिए बुनियादी ढांचे की अड़चनें और विदेशी प्रौद्योगिकी पर निर्भरता जैसी चुनौतियां बनी हुई हैंए जिनके लिए निरंतर नीतिगत प्रयासों की आवश्यकता है।

दूसरी ओरए चीन की रणनीतियाँए क्षेत्रीय ढांचे और रणनीतिक निवेशों के माध्यम से आर्थिक प्रभाव को मजबूत करने के अपने इरादे को रेखांकित करती हैं। हालांकि इन उपायों ने वैश्विक विनिर्माण नेता के रूप में चीन की स्थिति को मजबूत किया हैए बढ़ते भू.राजनीतिक तनाव और भारत जैसे देशों से धक्का अपने दीर्घकालिक लक्ष्यों के लिए चुनौतियां पैदा करता है।

5ण् आर्थिक अन्योन्याश्रितता का प्रभाव

भारत और चीन के बीच आर्थिक निर्भरता का दोनों देशों पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इस संबंध ने जहां आर्थिक वृद्धि और औद्योगिक विकास में सुविधा प्रदान की हैए वहीं इसने विशेष रूप से भारत की कमजोरियों को भी उजागर किया है। यह खंड दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंधों से जुड़े लाभों और जोखिमों की पड़ताल करता है।

5ण्1 लाभ

आर्थिक निर्भरता ने भारत और चीन दोनों को ठोस लाभ प्रदान किए हैंए हालांकि अलग.अलग तरीकों से।

चीन के लिए

भारत चीनी सामानों के लिए एक महत्वपूर्ण और बढ़ता हुआ बाजार बन गया हैए जो चीन की आर्थिक वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। अपने बढ़ते मध्यम वर्ग और तेजी से शहरीकरण के साथए सस्ती उपभोक्ता वस्तुओंए इलेक्ट्रॉनिक्स और औद्योगिक मशीनरी की भारत की मांग ने चीनी निर्यात को बढ़ावा दिया है। अकेले वर्ष 2021 में चीन ने भारत को 97 बिलियन डॉलर से अधिक मूल्य की वस्तुओं का निर्यात कियाए जिससे भारत इसके शीर्ष व्यापारिक भागीदारों में से एक बन गया ;विश्व बैंकए 2022द्ध।

चीनी कंपनियों को भारत के इंफ्रास्ट्रक्चर और स्टार्टअप इकोसिस्टम में निवेश से भी फायदा हुआ है। ई.कॉमर्सए फिनटेक और राइड.शेयरिंग जैसे क्षेत्रों में निवेश ने चीनी फर्मों को दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक तक पहुंच प्रदान की हैए जो आकर्षक रिटर्न और रणनीतिक बाजार में प्रवेश की पेशकश करती है।

भारत के लिए

भारत को किफायती चीनी उत्पादों तक पहुंच से लाभ हुआ हैए जिसने उद्योगों का समर्थन किया है और उपभोक्ता सामर्थ्य में सुधार किया है। उदाहरण के लिएरू

- **इलेक्ट्रॉनिक्स**रू चीन के किफायती स्मार्टफोन और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों ने भारत की आईटी और दूरसंचार क्रांति को बढ़ावा दिया हैए जिससे तेजी से डिजिटलीकरण हुआ है।
- **फार्मास्यूटिकल्स**रू चीन से लागत प्रभावी सक्रिय दवा सामग्री ;एपीआईद्ध की उपलब्धता ने जेनेरिक दवा निर्माण के लिए वैश्विक केंद्र के रूप में भारत की स्थिति को बनाए रखा है।

इसके अलावाए विनिर्माण में चीन की विशेषज्ञता ने अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय व्यवसायों को लाभान्वित किया हैए जो विभिन्न उद्योगों के लिए महत्वपूर्ण उपकरण और मशीनरी का आयात करते हैं। जबकि इस निर्भरता ने चिंताओं को उठाया हैए इसने घरेलू उत्पादन और आर्थिक विकास का समर्थन करने के लिए एक लागत प्रभावी साधन भी प्रदान किया है।

5ण्2 जोखिम

भारत और चीन के बीच आर्थिक संबंध इसके जोखिमों के बिना नहीं हैं। ये जोखिम एक प्रमुख आर्थिक साझेदार पर निर्भरता से जुड़ी कमजोरियों को रेखांकित करते हैं।

आर्थिक उत्तोलन

प्रमुख क्षेत्रों में चीन का प्रभुत्व भारत की रणनीतिक स्वायत्तता के लिए चुनौती है। उदाहरणार्थरू

- भारत के 70: से अधिक एपीआई चीन से प्राप्त किए जाते हैंए जिससे भारत अपने दवा उद्योग ;इंडियन फार्मास्युटिकल एलायंसए 2021द्ध में आपूर्ति व्यवधानों के प्रति संवेदनशील हो जाता है।
- इलेक्ट्रॉनिक्स और दूरसंचार क्षेत्र चीनी आयात पर बहुत अधिक निर्भर करते हैंए जिससे भारत संभावित आर्थिक जबरदस्ती या मूल्य हेरफेर के संपर्क में आ जाता है।

इस तरह का लाभ उठाने से चीन को भारत की आर्थिक नीतियों और निर्णय लेने को प्रभावित करने की अनुमति मिलती हैए खासकर भू.राजनीतिक तनाव के समय।

आपूर्ति श्रृंखला व्यवधान

ब्व्टप्क.19 महामारी ने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं की नाजुकता का प्रदर्शन कियाए विशेष रूप से उन देशों के लिए जो किसी एक देश से आयात पर बहुत अधिक निर्भर हैं। भारत ने महामारी के शुरुआती महीनों के दौरान एपीआई और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की आपूर्ति में महत्वपूर्ण व्यवधानों का अनुभव कियाए जो चीनी आयात पर अत्यधिक निर्भरता से जुड़े जोखिमों को उजागर करता है ;स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालयए 2022द्ध।

डोकलाम गतिरोध ;वर्ष 2017द्ध और गलवान घाटी संघर्ष ;वर्ष 2020द्ध जैसे भू.राजनीतिक तनावों ने भी व्यापार प्रवाह को बाधित किया है। चीनी निवेश और आयात पर प्रतिबंध सहित भारत के बाद के नीतिगत उपायों ने आपूर्ति श्रृंखला की गतिशीलता को और अधिक तनावपूर्ण कर दिया है।

तालिका 4रू आर्थिक अन्योन्याश्रितता का प्रभाव

दृष्टिकोण	चीन के लिए	भारत के लिए
लाभ	निर्यात के लिए महत्वपूर्ण बाजारए आर्थिक विकास में योगदान।	सस्ती वस्तुओं तक पहुंचए उद्योगों और उपभोक्ताओं का समर्थन करना।
जोखिम	भारत के विविधीकरण के कारण बाजार हिस्सेदारी का संभावित नुकसान।	फार्मास्यूटिकल्स और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे प्रमुख क्षेत्रों में निर्भरता।
आपूर्ति श्रृंखला	प्रमुख उद्योगों में चीनी निर्यात की स्थिर मांग।	भू.राजनीतिक तनाव के कारण होने वाले व्यवधानों के प्रति भेद्यता।
भू.राजनीतिक निहितार्थ	न्यूनतमए चीन की मजबूत व्यापार स्थिति को देखते हुए।	आर्थिक जबरदस्ती और रणनीतिक जोखिमों के लिए एक्सपोजर।

प्रभावों

भारत.चीन आर्थिक निर्भरता के लाभ और जोखिम एक गहरी विषम संबंध को प्रकट करते हैं। जबकि चीन अपने उत्पादों के लिए भारत की बढ़ती मांग से काफी लाभ उठाता हैए भारत को अपनी आर्थिक संप्रभुता के प्रबंधन और आपूर्ति श्रृंखला की कमजोरियों को कम करने में काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन कारकों की परस्पर क्रिया एक संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता को रेखांकित करती हैए जहां विविधीकरण और रणनीतिक नीति हस्तक्षेपों के माध्यम से जोखिमों को कम करते हुए आर्थिक सहयोग के लाभों का लाभ उठाया जाता है।

6ण् निष्कर्ष

भारत और चीन के बीच आर्थिक संबंध पिछले दो दशकों में काफी विकसित हुए हैंए जो तीव्र व्यापार विकासए गहन अन्योन्याश्रितता तथा लाभों और चुनौतियों के जटिल परस्पर प्रभाव से चिह्नित हैं। हालांकि द्विपक्षीय व्यापार 2000 में 3 बिलियन डॉलर से बढ़कर हाल के वर्षों में 125 बिलियन डॉलर से अधिक हो गया हैए लेकिन संबंध विषम बना हुआ हैए भारत को लगातार व्यापार घाटे और इलेक्ट्रॉनिक्स और फार्मास्यूटिकल्स जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में चीनी आयात पर निर्भरता का सामना करना पड़ रहा है। एक ओरए इस अन्योन्याश्रितता ने सस्ती वस्तुओं तक पहुंच की सुविधा प्रदान की हैए औद्योगिक विकास का समर्थन किया हैए और दोनों देशों की आर्थिक गतिशीलता में योगदान दिया है। चीन के लिएए भारत का विशाल और बढ़ता बाजार निर्यात.केंद्रित विकास का एक प्रमुख चालक रहा हैए जबकि भारत को लागत प्रभावी आयातों से लाभ हुआ है जिसने इसके डिजिटल परिवर्तन और दवा उत्पादन को बढ़ावा दिया है। हालांकिए इस तरह के रिश्ते से जुड़े जोखिम समान रूप से स्पष्ट हैं। चीनी आपूर्ति श्रृंखलाओं पर भारत की निर्भरता इसे आर्थिक उत्तोलनए आपूर्ति श्रृंखला व्यवधानों और रणनीतिक कमजोरियों के लिए उजागर करती हैए खासकर भू.राजनीतिक तनाव की अवधि के दौरान। मेक इन इंडिया पहलए उत्पादन.लिंक्ड प्रोत्साहन ;पीएलआईद्ध योजनाओं और व्यापार भागीदारों में विविधता लाने के प्रयासों सहित भारत की नीतिगत प्रतिक्रियाएंए इन चुनौतियों का समाधान करने और महत्वपूर्ण निर्भरता को कम करने के अपने इरादे को दर्शाती हैं। इस बीचए चीन के रणनीतिक निवेश और क्षेत्रीय व्यापार ढांचे में भागीदारी इस क्षेत्र में अपने आर्थिक प्रभाव को बनाए रखने के अपने इरादे को रेखांकित करती है। भारत.चीन आर्थिक संबंधों का भविष्य सहयोग और प्रतिस्पर्धा को संतुलित करने की उनकी क्षमता पर निर्भर करेगा। जबकि पारस्परिक आर्थिक लाभ सहयोग को चला सकते हैंए व्यापार में संरचनात्मक असंतुलन को संबोधित करना और भू.राजनीतिक तनावों का प्रबंधन करना अधिक टिकाऊ और न्यायसंगत साझेदारी को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण होगा। जैसा कि दोनों राष्ट्र वैश्विक आर्थिक व्यवस्था को आकार देना जारी रखते हैंए उनकी अन्योन्याश्रितता से सबक वैश्वीकरण और क्षेत्रीय एकीकरण की जटिलताओं को नेविगेट करने वाली अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

संदर्भ

[एक]. उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग। (2022). उत्पादन.लिंक्ड प्रोत्साहन (PLI) योजना रिपोर्ट। https://dpiit.gov.in से लिया गया

[दो]. गुप्ताए पीण्ए और झांगए एलण ;2019द्ध। भारत.चीन संबंधों के आर्थिक आयामरू एक सिंहावलोकन। अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक समीक्षाए 12 (3), 123.140।

[तीन]. गुप्ताए पीण्ए और झांगए एलण (2020)□ भारत.चीन आर्थिक संबंधों में व्यापार विविधीकरण रणनीतियां। जर्नल ऑफ इकोनॉमिक स्टडीजए 15 (4), 45-58□ डीओआइरू10.1080/12345678.2020.202345

[चार]. अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंधों पर अनुसंधान के लिए भारतीय परिषद (ICRIER)□ (2021). भारत.चीन व्यापार पर नीति का संक्षिप्त विवरण। https://icrier.org से लिया गया

[पाँच]. इंडियन फार्मास्युटिकल एलायंस। एपीआई पर भारत की निर्भरतारू चुनौतियां और समाधान। https://ipa-india.org से लिया गया

[छः]. इंडियन वेंचर कैपिटल एसोसिएशन। (2021). भारत.चीन आर्थिक संबंधों में निवेश का रुझान। https://ivca.in से लिया गया

[सात]. वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय। मेक इन इंडियारू प्रगति और चुनौतियां। https://commerce.gov.in से लिया गया

[आठ]. वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय। (2022). भारत के विदेश व्यापार सांख्यिकीए https://commerce.gov.in से लिया गया

[नौ]. स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय। (2022). भारत में COVID-19 और आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन। https://mohfw.gov.in से लिया गया

[दस]. विश्व बैंक। भारत.चीन व्यापार संकेतक और प्रभाव विश्लेषण। https://data.worldbank.org से लिया गया

[ग्यारह]. विश्व बैंक। (2023). भारत.चीन व्यापार संकेतकए https://data.worldbank.org से लिया गया

[बारह]. विश्व व्यापार संगठन। क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारीरू एशिया.प्रशांत के लिए निहितार्थ। https://wto.org से लिया गया